Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 7 ~ Issue 4 (2019) pp: 66-71
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

कन्नौज की मृण्मूर्तियों में सामाजिक जीवन

Dr. Ambika Bajpai
Associate Professor, Navyug Kanya Mahavidyalaya, Lucknow
Email:ambika.bajpai1977@gmail.com

सार

मृदा, ईश्वर द्वारा मानवता को प्रदत्त सर्व सुलभ व सर्वाधिक लाभप्रद प्राकृतिक संसाधन है, जिससे मृण्मूर्तिकला विकसित हुयी। सभ्यता के प्रारम्भ से ही मृदा का प्रयोग मानव द्वारा घरेलू उपकरण, बर्तन व मूर्तियाँ बनाने में किया गया। धातु और पाषाण सर्वत्र सुलभ न थे। इनका अभाव था और ये मूल्यवान भी अधिक थे। धातु से कृतियाँ निर्मित करना श्रम साध्य भी था। मृदा मानव को सर्व सुलभ थी। इसे सरलता से नई नई कृतियों का रूप दिया जा सकता था, अधिक श्रम के बिना। मृण कलाकृतियाँ सामान्य जनमानस के सामाजिक व धार्मिक जीवन को उजागर करती हैं। राजशेखर के विवरण के अनुसार नवी शताब्दी में मृण्मूर्तियाँ बनाने वाले कलाकारों का समाज में इतना अधिक सम्मान था कि वे भी अन्य कलाकारों जैसे–स्वर्णकारों, चित्रकारों की भांति राजा की सभा में स्थान प्राप्त करते थे।[1]

मृण्मूर्तियों का निर्माण घरेलू कार्यों में किया जाता था। कुछ मिट्टी की मूर्तियाँ बुरी आत्माओं से बचाव के लिए प्रयोग की जाती थी जिनके दृष्टांत बेबीलोनिया से मिलते हैं।[2] उपासना के लिए भी मिट्टी की मूर्तियाँ बनायी जाती थी। बच्चों द्वारा मनोरंजन के लिए भी इनका प्रयोग होता था। मेसोपोटामिया[3], मिस्र[4] व ग्रीस[5] में शवाधानों से मानव कंकालों के साथ मृण्मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं। बेबीलोन और किश[6] के घरों और मंदिरों की दीवारों की नीव में भी मृण्मूर्तियाँ देखी गयी हैं।

वर्तमान में कन्नौज उ0प्र0 राज्य का एक प्रमुख जनपद है जो कानपुर मण्डल में स्थित है। प्राचीन कन्नौज नगर मध्य देश के अन्तर्गत पांचाल राज्य में भागीरथी के दक्षिणी तट पर एवं गंगा–काली संगम के निकट बसा हुआ था।[7] राजतरंगिणी में कान्यकुब्ज प्रदेश का विस्तार यमुना तट से कालिका (काली) नदी तक बताया गया है। हवेनसांग के अनुसार इसकी परिधि 4000 ली (प्रायः 670 मील) थी।[8] सतयुग में कन्नौज का नाम 'महोदय' था।[9] कन्नौज का पौराणिक इतिहास बहुत महत्वपूर्ण है। छठी शताब्दी ई0पू0 में कन्नौज एक प्रतिष्ठित नगर था। गुप्तशासन काल तक यह अलग–अलग वंशों द्वारा शासित रहा परन्तु इसका कोई विशेष महत्व नही रहा। छठी शताब्दी ई0 के प्रथम चरण के कन्नौज को मौखरी नरेशों के शासन काल में पुनः प्रतिष्ठा मिलनी शुरू हो गयी। तत्पश्चात पुष्यभूति वंश के नरेश सम्राट हर्षवर्धन ने कन्नौज की प्रतिष्ठा में और अधिक वृद्धि की। हर्ष के बाद यशोवर्मन कन्नौज का राजा हुआ। फिर आयुध वंश ने कन्नौज पर शासन किया। 810 ई0 में गुर्जर प्रतिहार नरेश नागभट्ट II ने कन्नौज को अपने साम्राज्य में शामिल कर लिया और तब से कन्नौज की उत्तरोत्तर प्रगति हुयी। यह प्रगति धर्म, साहित्य कला सहित सभी क्षेत्रों में देखी जा सकती है।

कन्नौज तथा उसके निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में पत्थर तथा मिट्टी से बने पुरावशेष व पुरावस्तुएँ मिली है। इनमें पाषाण निर्मित ब्राह्मण, बौद्ध व जैन प्रतिमाएँ, मिट्टी की बनी ढ़ेरों मृण्मूतियों आदि है जो वर्तमान में यहां के संग्रहालय के संरक्षित है।

वर्ष 1955 के कन्नौज के 'जयचन्द के किले' नाम से प्रसिद्ध टीले का लम्बवत उत्खनन किया गया। जिसके फलस्वरूप चार स्तर मिले। कन्नौज पुरातत्व संग्रहालय में संग्रहीत मृण्मूर्तियों आकस्मिक लघु उत्खनन, सर्वेक्षण और धरातल से प्राप्त हुई है, जिनकी बनावट शैली तथा वैज्ञानिक उत्खनन की समरूपता के आधार पर उनका काल–निर्धारण किया गया है। कन्नौज काली और गंगा नदी के संगम पर बसा है। यहाँ की मिट्टी में रेतीला अंश कुछ ज्यादा है। यमुना तट पर बसे मथुरा, कौशाम्बी की मिट्टी चिकनी है। अहिच्छत्रा, राजघाट की मृण्मूतियाँ सुडौल, साफ–सुथरी और अधिक कलात्मक है। इनकी तुलना में कन्नौज की मृण्मूर्तियाँ सामान्य, रूखी व कुछ भद्दी दिखाई देती हैं । यह अंतर संभवतः मिट्टी माध्यम के चुनाव और उसके संस्कार के कारण है। कन्नौज में मृण्मूर्ति निर्माण में प्रयोग की गयी मृदा बहुत कुछ खुरदुरी है।

कन्नौज से बड़ी संख्या में मिट्टी की बनी स्त्री आकृतियां मिली है जिनके उन्होनें कमर में धोती जैसा वस्त्र धारण किये दिखाया गया है। बाएँ कंधे में दुशाला डाले है। एक मृत्फलक पर स्त्री के अधोवस्त्र पर क्षैतिज धारियाँ पड़ी दिख रही हैं। एक मृण्मूर्ति में स्त्री का उर्ध्ववस्त्र तो स्पष्ट नहीं है पर उस पर पड़ी तिरछी धारियाँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। नीचे धोती जैसा वस्त्र धारण किये है। पुरूष आकृतियों में भी धोती अधोवस्त्र के रूप में देखी जा सकती है।

ऊपर के भाग में कोई वस्त्र नही दिख रहा है। कन्नौज की एक मृण्मूर्ति में पुरूष को ऊंची टोपी धारण किये हुये दिखाया गया है जिसे कूल्हा टोपी कहा गया है। इसके उदाहरण अन्यत्र नही मिलते है। यह मौलिक भारतीय तत्व नही है इसे विदेशी तत्व मानते हुए कहा जा सकता है यह टोपी धारण करना समाज में विदशी प्रभाव का सूचक रहा होगा। गुप्तों से पूर्व कुषाणों का शासन था। अतः इसे वेशभूषा में कुषाण प्रभाव मान सकते है। मृण्मूर्तियों में पुरुषों को यज्ञोपवीत धारण किये दिखाया गया है। यह यज्ञोपवीत दोहरी समानान्तर रेखाओं द्वारा प्रदर्शित है जो बाएँ कंधे के ऊपर से जाकर दाहिने हाथ के नीचे से दिखाया गया है जिससे पता चलता है कि समाज में यज्ञोपवीत धारण करने की प्रथा प्रचलित थी। इससे यह भी इंगित होता है कि समाज में उपनयन एक महत्वपूर्ण संस्कार के रुप में प्रचलित था। यज्ञोपवीत यज्ञ से सम्बद्ध था, इसलिये यज्ञ और वेद तथा कर्मकांड एक दूसरे से आबद्ध थे। साहित्यिक साक्ष्यों में यज्ञोपवीत का महत्व बताया गया है। ब्रह्मचारी द्वारा उसे धारण करने का विवरण मिलता है।[10] यह मृण्मूर्ति गुप्तकालीन है। इससे सूचित होता है कि गुप्तकाल वैदिक धर्म के पुनरूद्धार का काल था। इसका संकेत इस मृण्मूर्ति में मिलता है। अतः समाज में स्त्री पुरुष के वस्त्रों के घाघरा, धोती, साड़ी आदि धारण करने के संकेत मिट्टी की मूर्तियो से मिलतें है। कन्नौज के क्षेत्र में वस्त्रों पर छपाई किये जाने के संकेत मिलते हैं क्योंकि विभिन्न डिजाइनों से युक्त मिट्टी के छापे कन्नौज से मिले हैं जो पुरातत्व संग्रहालय में संरक्षित है। साथ ही ठप्पे और सांचे भी मिले हैं।

स्त्री पुरुष अपने शरीर को सुन्दर बनाने के लिए अनेक प्रकार के अलंकरणो का प्रयोग करते थे। अनेक मिट्टी की मूर्तियों को आभूषण धारण किये दिखाया गया है। कानों में गोल, कुण्डल, गले में कंठी, हार, भुजाओं में भुजबंद, वलयाकार एकावली, ग्रेवयक कटि में मेखला, हाथों में कंगन भुजाओं में भुजबंद व पैरों में कड़े देखे जा सकते हैं। कुछ आभूषण स्त्री पुरुष दोनों ही धारण करते थे जैसे कुण्डल, हार, मेखला, केयूर आदि। साहित्यिक साक्ष्यों से भी लगभग सभी कालों में प्राचीन भारत में आभूषणों के प्रयोग के साक्ष्य मिलते हैं पतंजलि के अनुसार सौन्दर्य वर्धन के लिये लोग आभूषण धारण करते थे।[11] अमरकोश में अनेक आभूषणों का उल्लेख मिलता है।[12] हर्षवर्धन के काल में तो समाज में शुभ और मंगल को व्यक्त करने के लिये मांगलिक आभूषण पहनने का भी उल्लेख मिलता है।[13] कन्नौज से मिट्टी के कर्णफूल शंख, हड्डी व मिट्टी की बनी चूड़ियाँ भी मिले है जो महत्वपूर्ण साक्ष्य है।[13.1]

कन्नौज की मिट्टी की मूर्तियों में सौन्दर्यपूर्ण केश रचना के दर्शन होते हैं। स्त्री पुरूष दोनों ही अपने केशों को बड़ी रुचि से संवारते थे। मृण्मूर्तियों में प्राप्त केश विन्यास के उदाहरणों से स्पष्ट है कि घुंघराले केश रखना लोगों को अधिक रूचिकर था। एक मुखाकृति में केशों को घुंघराले लटों की तीन पंक्तियों में सजाया गया है जबकि एक अन्य उदाहरण में केशों को मध्य में दो भागों में विभाजित कर उन्हे घुंघराले घने केशों के रूप में प्रदर्शित किया गया है। इसी प्रकार के केशसज्जा के अनेक साक्ष्य कन्नौज से मिलते हैं।

कन्नौज के पुरातत्व संग्रहालय में रखी मिट्टी की मूर्तियों से समाज के कुछ वर्गो के बारे में भी जानकारी मिलती है। पशुओं पर बैठी कुछ सवारी की प्रतिमाओं में एक अश्वारोही की प्रतिमा महत्वपूर्ण है। जो काफी खंडित है। सवार का चेहरा लम्बा है सिर पर टोपी है आँख, नाक, कान और होंठ स्पष्ट बने है। दाहिना हाथ भुजा से खंडित है। दाहिना पैर भी जंघा से टूटा है। वह अपने बाये हाथ में बड़ी ढाल पकडे है। यद्यपि उसका वाहन गायब है तथापि उसकी बैठने की मुद्रा और उसकी सतर्कता उसे अश्वारोही सिद्ध करती है। संग्रहालय में एक गजारोही की प्रतिमा है जिसमें हाथी की आकृति सुस्पष्ट है जिसकी सूंड अन्दर की आरे मुड़ी है। गज की पीठ पर एक लम्बे चेहरे वाले पुरुष को बैठा दिखाया गया है। **चित्र (1)** बाणभट्ट के अनुसार हर्ष को अपनी गजसेना से बहुत प्रेम था। उसकी सेना में हाथी सबसे अधिक संख्या मे थे। बाण ने हाथियों को "फौलादी दीवार" कहा है। जो दुश्मन की बाणवृष्टि झेल सकते है। हर्ष का प्रिय हाथी 'दर्पशाप' था।[14]

कन्नौज संग्रहालय में कुछ योद्धाओं की मृण्मूर्तियों है जो अपने हाथों में तलवार, ढाल व भाला धारण किये है। संग्रहालय में रखे एक चौड़े फलक में एक शीर्षविहीन स्त्री का आधा भाग दिखाया गया है जो दाहिने हाथ मे बाण पकड़े है। इसे सैनिक स्त्री माना गया है जो दाहिने हाथ में बाण पकड़े है। इसे सैनिक स्त्री माना गया है। बाणभट्ट ने हर्षचरित में 'पदाति सैनिको' का जो विशद वर्णन किया है उसकी स्पष्ट छाप पुरातत्व संग्रहालय की मृण्मूतियों में स्पष्ट दिखाई देती है।[15]

सामान्यतः किसी भी संस्कृति में दो वर्ग पाये जाते हैं– प्रथम धनी व द्वितीय कम सम्पन्न वर्ग। विभिन्न मृदा उपकरणों के आधार पर कन्नौज के समाज में प्राचीन काल में अनेक वर्गो के होने का अनुमान लगाया जा सकता है जैसे–कुम्हार, ईंट बनाने वाले, छापे, ठप्पे और सांचे बनाने वाले, पाटल मुद्राये बनाने वाले, मनके बनाने वाले, नावे बनाने वाले आदि। कन्नौज के निकटवर्ती क्षेत्रों से बड़ी संख्या में मिट्टी की बनी देव प्रतिमाओं का मिलना सिद्ध करता है कि समाज में धर्म का महत्व अधिक था और समाज धर्म प्रधान था। अतः समाज में पुरोहितों का अलग वर्ग रहा होगा जिसका विशिष्ट स्थान होगा।

कन्नौज वादकों की दो मिट्टी की मूर्तियां है इनमें से एक पंशुमुखी वादक को दोनों हाथो से ढोल वाघयंत्र बजाते दिखाया गया है। **(चित्र 2)** कनौज की ये मूर्तियॉ कुषाणकालीन मानी जाती है जो राजघाट की वादक मूर्तियों से काफी समानता रखती हैं। प्राचीन काल में मृदंग, वीणा, ढोल, दुंदुभी प्रमुख वाद्य यंत्र थे। 'तंत्री–पटहिका' नामक वाद्य यंत्र गले

*Corresponding Author: Dr. Ambika Bajpai

में डोरी से लटकाकर बजाया जाता था।[16] उपरोक्त वर्णित वादक सम्भवतः यही वाद्य यंत्र बजाता दिखाया गया है। कन्नौज की उपर्युक्त तीनों प्रकार आरोही, योद्धा व वादको की मृण्मूर्तियॉ समाज में विद्यमान तीन वर्गों के विषय में जानकारी मिलती है। इनसे पता चलता है कि आरोही, योद्धाओं व वादक समाज के तीन महत्वपूर्ण वर्ग थे। जिनके अपने–अपने कर्त्तव्य निर्धारित थे। आरोही और योद्धा वर्ग संभवतः राज्य की सेना से सम्बन्धित थे। वादक समाज में मनोविनोद से सम्बन्धित थे। संगीत मानव को सदैव से ही प्रभावित करता है। मानव मन संगीन सुन कर असीम आन्नद . प्राप्त करता है। वादक मृण्मूर्तियॉ इंगित करती है कि प्राचीन समाज में लोग अपने मनोरंजन के लिये वाद्ययंत्र बजाते और सुनते थे, जिसका आज भी प्रचलन है। कन्नौज महान कवियों की भूमि थी। बाणभट्ट, मयूर, मातंग दिवाकर, भवभूति, वाक्पति, राजेशखर, लक्ष्मीधर, श्रीहर्ष मिश्र, राजशेखर सूरि आदि विद्वानों ने कन्नौज की धरती को अपने कृतित्व से गौरवान्वित किया।

कन्नौज के पुरातत्व संग्रहालय में तीन छोटे आकार की नावें रखी हुयी है जिनकी बनवाट साधारण है। सम्भवतः इनका कोई धार्मिक प्रयोजन रहा होगा। कन्नौज गंगा नदी पर स्थित था। सम्भवतः गंगा में प्रवाहित करने के लिए इनका निर्माण किया गया होगा परन्तु सामाजिक संदर्भ में हम यह अनुमान लगा सकते हैं कि कन्नौज के समाज में नावों को चलाने वाले नाविक वर्ग का भी पता चलता है जो सम्भवतः निषाद जाति के रहे होंगे। रामायण में इस वर्ग का उल्लेख होता है। भगवान रामचन्द्र को निषादराज गुह ने अपनी नौका से नदी के पार उतारा था।[17] मनु ने भी निषाद जाति का उल्लेख किया है।[18] अतः निषाद जाति भी कन्नौज के समाज का एक अंग रही होगी।

समाज में नृत्य भी मनोरंजन का साधन था। अनेक मृण्मूर्तियों में स्त्री व पुरुषों के पैरों को नृत्य मुद्रा मे ंदिखाया गया है। जिससे यह पता चलता है कि समाज में नृत्य का भी प्रचलन था। नृत्य में स्त्री–पुरुष दोनों ही भाग लेते थे। बाण ने 'आरभटी' नृत्य का उल्लेख किया है।[19]

कन्नौज से मिट्टी के बने पाँसे प्राप्त हुये है जिससे सिद्ध होता है कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल से ही शतरंज मनोरंजन का प्रमुख साधन रहा होगा। इसकी पुष्टि हर्षचरित से होती है। इसमें बाणभट्ट ने 'अंधकारितललाट पट्टाष्टपाद ' का उल्लेख किया है, जो आठ घरों वाला शतरंज पट्ट था।[20]

पशु–पक्षियों की आकृतियों के मिट्टी के खिलौने बनाये जाने के साहित्य व पुरातात्विक साक्ष्य मिलते हैं। महाभारत, मृच्छकटिकम और अभिज्ञान शाकुन्तलम में क्रमशः मिट्टी के घोड़े, गाड़ी और मोर के संदर्भ मिलते हैं। कन्नौज से बड़ी संख्या में मिट्टी की पशु–पक्षियों की मूर्तियाँ मिली है जिनका प्रयोग खिलौनों के रूप में खेलने के लिए और सजावट के लिए किया जाता होगा। यहाँ से हांथी, वराह, वृषभ, मेढ़े, ऊंट व चिड़ियों की मूर्तियां प्राप्त हुयी हैं। इन मूर्तियों का विवाह संस्कार में भी बहुत महत्व रहा होगा क्योंकि बाणभट्ट ने हर्षचरित में राजश्री के विवाह के अवसर का वर्णन करते हुए बताया है कि भांति–भांति के मिट्टी के खिलौनों को विवाह वेदी के चारों ओर सजाया जाता था।[21] साहित्यिक साक्ष्यों के संदर्भ में कहा जा सकता है कि समाज में विवाह संस्कार के अवसर पर इन मिट्टी के खिलौनों का विशेष महत्व रहा होगा।

कन्नौज की मिट्टी की मूर्तियॉ यह सिद्ध करती है कि समाज में लोग सौन्दर्य प्रेमी थे। वे अपने वस्त्राभूषणों का विशेष ध्यान रखते थे। मृण्मूर्तियों में स्त्री आकृतियों को विविध आभूषण धारण किये दिखाया गया है। जो उस समय प्रचलित आभूषणों की जानकारी देता है। स्त्रियाँ अपने सौन्दर्य को देखने के लिये दर्पण का प्रयोग करती थी जिसका प्रमाण एक नीचे से खंडित अंडाकार फलक है। वह अपना मुख निहारती दिख रही है। दाहिनी ओर लटकती उसकी चोटी उसके सौन्दर्य को और बढा रही है **चित्र (3)** संग्रहालय में मिट्टी के मनके भी बड़ी संख्या में है जो गोल आकार के हैं और इनमें उर्ध्वाधर छिद्र है। इनके अतिरिक्त मनको की एक माला भी संग्रहालय में है। कन्नौज के निकटवर्ती क्षेत्रों से सर्वेक्षण के फलस्वरूप बड़ी संख्या में मिट्टी के मनके प्राप्त हुये हैं। कुछ पर उत्कीर्ण रेखाओं से अलंकरण किया गया है। कन्नौज में लोग अपने शरीर के सौन्दर्य के साथ साथ अपने घर के सौन्दर्य पर भी बहुत ध्यान देते थे। यह इस बात से इंगित होता है कि काफी मृण्मूर्तियों में ऊपर व नीचे की ओर छिद्र मिलते है। इनको लटका कर घरों में लोग सौन्दर्य वृद्धि करते रहे होगें। इन को डोरी से बाँध कर लटकाया जाता होगा। या लकड़ी से बांधा जाता होगा।

मृण्मूर्तियाँ चूँकि समाज के लोक जीवन से सम्बन्धित होती है इसलिये इनसे सामाजिक सम्बंधों पर भी प्रकाश पड़ता है। कन्नौज से अनेक स्त्री–पुरुषों की युगल मृण्मूर्तियाँ मिली है जिन्हें दम्पत्ति मूर्तियॉ मानकर समाज में परिवार नामक संस्था के दृढ होने का अनुमान लगाया जा सकता है। समाज में अनेक जातियाँ विद्यमान थी जिससे अनुलोग–प्रतिलोम विवाहों के प्रचलन का पता चलता है। जिसकी पुष्टि ह्वेनसांग के विवरण से होती है। कन्नौज के पुरातत्व संग्रहालय में अनेक मिट्टी की मूर्तियॉ ऐसी मिली है जिनमें स्त्री की गोद में बच्चे को लिये दिखाया गया है। इसी से मिलती–जुलती मृण्मूर्तियॉ कौशाम्बी व अहिच्छत्र से मिली है। इन मृण्मूर्तियों को माता–शिशु का अंकन माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त इन्हें परिचारिकाओं की मूर्ति भी मान सकते है जो सम्पन्न वर्गो द्वारा शिशु के समुचित पालन–पोषण के लिए नियुक्त की जाती थी। अहिच्छत्रा के उत्खनन की रिपोर्ट में दिव्यावदान के आधार पर डा0 वासुदेवशरण अग्रवाल ने सम्भावना व्यक्त की है कि ये अभिजात्य धनी वर्ग के बच्चों के पालन–पोषण हेतु नियुक्त की जाने वाली परिचारिकाएं हैं। [23] अतः अनुमान लगा सकते हैं कि जैसे आज समाज में बच्चों के पालन–पोषण के लिए परिवारों में नैनी या

परिचारिकाएं नियुक्त की जाती हैं वैसे ही कन्नौज के प्राचीन समाज में भी परिचारिकाएं नियुक्त की जाती थीं जिनका अंकन हमें मृण्मूर्तियों में मिलता है। ये कई प्रकार की होती थी जैसे–

बच्चों को गोद खिलाने के लिए– अंकधात्री

बच्चों की साजसज्जा के लिए – मालाधात्री

बच्चों को दूध पिलाने के लिए – क्षीरधात्री

बच्चों को खेल खिलाने के लिए – क्रीड़ाधात्री

अहिच्छत्रा, कौशाम्बी सहित कन्नौज से बड़ी संख्या में इन मृण्मूर्तियों के मिलने से यह सम्भावना बनती है कि लोग ''सृष्टि'' देवी की तरह बालकों की संरक्षिका के रूप में इन्हे सजाते और पूजा अर्चना करते होंगे।

प्राचीन कन्नौज के समाज में लोग वस्तुओं की नाप तौल से भी परिचित थे। यहाँ से बड़ी संख्या में मिट्टी की गोल, लाल ओपदार टिक्कियां मिली हैं जो कुछ चपटी और पतली हैं। अधिकांश मण्डल दोनों ओर अलंकृत हैं जबकि कुछ एक ओर सादी और दूसरी ओर अलंकृत हैं। जिन्हे ''पाटल मुद्राएं'' कहा गया है। इन पर अलंकरण पशु आकृतियों का मिलता है। जैसे कुत्ता, हिरन आदि। कुछ के मध्य में छिद्र हैं। नापतौल में प्रयोग के अतिरिक्त इनका धार्मिक महत्व भी माना जा सकता है। डॉ0 अग्निहोत्री जी का विचार है कि कन्नौज की इन पाटल मुद्राओं का उपयोग प्रतीकात्मक मंडलाकार सूर्योपासना में भी रहा होगा।[24] सम्भवतः नापतौल में इन मिट्टी की टिकियों को प्रयोग होता होगा क्योंकि ऐसी ही टिकियां सिंधु घाटी सभ्यता के क्षेत्र से भी मिली हैं। अतः कन्नौज की इन मिट्टी की पाटल मुद्राओं को आद्यैतिहासिक कालीन समाज से सम्बन्धित माना जा सकता है।

मानव द्वारा भवन निर्माण हेतु ईटों का प्रयोग पुरातनकाल से ही किया जा रहा है। सिंधु सभ्यता में भी भवन ईटों से निर्मित होने के संकेत मिलते हैं। कन्नौज के पुरातत्व संग्रहालय में ईसा की प्रथम शताब्दी के समय ही दों ईटें सुरक्षित रखी हैं जो लोगों द्वारा इस काल में भवन निर्माण में प्रयोग किये जाने की ओर संकेत है। समाज के लोग प्रथम शताब्दी ईस्वी में ईटों से निर्मित भवनों में निवास करते रहे होंगे। मौखरियों के समय से कन्नौज ने विशेष महत्व प्राप्त किया और हर्ष के काल में व उसके बाद कन्नौज मंदिरों का नगर बन गया। ह्वेनसांग ने वहाँ अनेक मंदिर होने के उल्लेख दिये हैं अतः ये मन्दिर भी ईटों से ही बनाये जाते होंगे जो विदेशी आक्रान्ताओं के आक्रमणों का शिकार बने।

कन्नौज की मिट्टी की मूर्तियों के आधार पर हम प्राचीन समाज के लोगों के धार्मिक विश्वास का भी अनुमान लगा सकते हैं। बड़ी संख्या में मिट्टी की भिन्न–भिन्न देवी देवताओं की प्रतिमाएं मिलना समाज की धार्मिक विविधता के साथ धार्मिक सामन्जस्य को सूचित करता है। सबसे प्राचीन देवी प्रतिमायें मातृदेवी की हैं जो प्रजनन शक्ति का प्रतीक मानी जाती हैं। मिट्टी की पट्टिकाओं पर देवी आकृति को बनाया गया है जिनके दोनों ओर अभिषेक करते हुए गज देखे जा सकते हैं। गज की उपस्थिति के आधार पर देवी को गजलक्ष्मी का अंकन माना जा सकता है। गणपति की मूर्तियां भी कन्नौज में निर्मित की गयी जो समाज में गणपति पूजन की ओर संकेत करती हैं। समाज में भौतिकवादी विचारधारा विकसित होने और समाज में धन सम्पदा का महत्व बढ़ने के साथ ही हमें कला में धन के देवता कुबेर का अंकन मिलता है। कन्नौज से मिट्टी की बनी एक देव प्रतिमा मिली है जिसके प्रतिमाशास्त्रीय लक्षण कुबेर प्रतिमा से मिलते हैं। जिससे पता चलता है कि समाज में कुबेर देवता की भी उपासना होती थी। इनके अतिरिक्त विष्णु, नैगमेश और बुद्ध की मिट्टी की बनी प्रतिमाएं भी कन्नौज से मिली हैं जो सामाजिक सामंजस्य व सौहार्द को व्यक्त करती हैं। नैगमेश जैन धर्म के एक देवता माने जाते हैं। अतः समाज में वैष्णव धर्म के साथ–साथ जैन व बौद्ध धर्म का भी प्रभाव था और सभी धर्मो के लोग सामाजिक श्रद्धाओं के साथ रहते थे। महिषासुरमर्दिनी व चामुण्डा की मिट्टी की प्रतिमाएँ शाक्त सम्प्रदाय के भी समाज में प्रभावी होने का संकेत देती हैं।

आरम्भ में नाग पूजा आर्येतर प्रभाव का परिणाम थी। कालांतर में यह आर्यो के समाज में समाहित हो गयी। यह भारतीय लोक धर्म का प्रमुख अंग रही है। नाग पूजन में ब्राम्हण जैन व बौद्ध तीनों धर्म में प्रवेश किया तथा इन्होने प्रत्येक धर्म के देवता संघ में, उपदेवता के रूप में स्थान प्राप्त किया।[25] कन्नौज से नागिन की एक मिट्टी की मूर्ति मिली है जिससे स्पष्ट होता है कि समाज में नागों की उपासना करने वाला वर्ग भी विद्यमान था।

प्राचीनकालीन समाज में यक्ष पूजा भी हुआ करती थी। वैदिक साहित्य में यक्षों का अर्थ अलौकिक प्राणी से लिया गया है। ऋग्वेद में यक्ष का अर्थ मृत व्यक्ति की आत्मा से लिया गया है।[26] कन्नौज से मिली कुछ यक्ष–यक्षी मृण्मूर्तियाँ पुरातत्व संग्रहालय में विद्यमान है, जो समाज में मृत आत्माओं के प्रति श्रद्धा और आदर का भाव व्यक्त करता है। यक्षों को रहस्यमय शक्तियों से सम्पन्न बनाया गया है। अतः समाज में कुछ अर्थों में अन्धविश्वास के विद्यमान होने का भी अनुमान लगाया जा सकता है। कन्नौज से भैरव की एक मिट्टी की मूर्ति मिली है जो अपने आप में विशिष्ट है क्योंकि यह शिव के सौम्य व रौद्र रूपों को तो दर्शाती है ही साथ में इसके पैरों की स्थिति से यह नृत्य करती प्रतीत

होती है। अतः इसे शिव की नृत्य मूर्ति भी मान सकते हैं। उत्तरी भारत में शिव के इस रूप की मूर्तियाँ बहुत अल्प हैं, अतः यह मृण्मूर्ति विशेष है।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि कन्नौज की मिट्टी की मूर्तियाँ प्राचीन काल के जीवन के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी प्रस्तुत करती हैं। समाज के विशिष्ट वर्गों, उनके रहन सहन, वस्त्र, वेषभूषा, आभूषण, अलंकरण, केशसज्जा, भवन, मनोरंजन के साधनों, विभिन्न वर्गों के आपसी सौहार्द, लोगों के धार्मिक विश्वासों की जानकारी होती है। इन पुरातात्विक साक्ष्यों की पुष्टि कुछ साहित्यिक साक्ष्यों जैसे बाणभट्ट के हर्षचरित, ह्वेनसांग के यात्रा विवरण, राजशेखर की कृतियों से भी होती हैं जिससे प्राचीन कन्नौज के समाज के विभिन्न पक्षों की पुष्ट जानकारी उपलब्ध हो जाती है।

संदर्भ सूची

1. काव्यमीमांसा, राजशेखर, अध्याय x, गायक बांड ओरिएण्टल सिरीज, पृ0 56।
2. Clay Figures, Van Buren, LWD
3. Excavations at UR. Wooly, London, 1953, Pg. 214, London
4. New Light on the most Ancient East, Childe V, 1952 Pg. 45, Pl. 30 B
5. A hand book of Greek Art, Richler, 1963, Pg. 216
6. Nineveh and Babylone, Parrot, London, 1961, Pg. 251
7. विष्णुधर्मोत्तरपुराण 1, 20, 2, 3,
   बौद्ध साहित्य में इसी भूभाग को 'मज्झिम देश, कहा गया है।
8. कन्नौज, दीक्षित, डॉ0 रामकुमार, 1955, पृष्ठ–1
9. पद्मपुराण, कुमारिकाखण्ड, कान्यकुब्ज माहात्म्य, 15, 17
10. शांखायन गृहसूत्र, 2, 2, 3
11. महाभाष्य, 3.2.56, 2.2.16, 2.2.24, 3.1.87
12. अमरकोश, 2.4, 11.9, 94.109, 2.6.103
13. रत्नावली, पृष्ठ 165

13.1 कन्नौजः पुरातत्व और कला, अग्निहोत्री जी.के., पृष्ठ 21

14. हर्षचरितः एक सांस्कृतिक अध्ययन, अग्रवाल, वासुदेव शरण, पृष्ठ 38
15. हर्षचरित सांस्कृतिक अध्ययन, अग्रवाल, वासुदेव शरण, पृष्ठ 20
16. हर्षचरित सांस्कृतिक अध्ययन, अग्रवाल, वासुदेव शरण, पृष्ठ 67
17. रामायण, अयोध्या काण्ड, 50.33
18. मनुस्मृति, 10.48
19. हर्षचरित सांस्कृतिक अध्ययन, अग्रवाल, वासुदेव शरण, पृष्ठ 33, 34
20. कन्नौज पुरातत्व और कला, अग्निहोत्री जी.के., पृष्ठ 21
21. हर्षचरित सांस्कृतिक अध्ययन, अग्रवाल, वासुदेव शरण, पृष्ठ 72–75
22. ट्रेवेल्स ऑफ ह्वेनसांग– ।।, पृष्ठ 138
23. Ancient India, Agarwal, V.S. Vol. IV, Pg. 125
24. कन्नौज पुरातत्व और कला, अग्निहोत्री जी.के., पृष्ठ 21
25. प्राचीन भारतीय मूर्ति विज्ञान, जोशी, नी0पु0 पृष्ठ 182
26. ऋग्वेद, 4.3.13

चित्र